भारतीय-वाङ्मयेषु

गोः संरक्षणं-सम्वर्धनम्

(Rearing and Conserving Cow in Indian Literature)

सम्पादकौ

डॉ. लक्ष्मीनारायण शास्त्री

डॉ. उमेश प्रसाद दास

प्रकाशक

संस्कार-भारती मानवकल्याण संस्थान जयपुर राजस्थान

बी-23, भूरापटेल नगर, पोस्ट-हीरापुरा, जयपुर (राज.) 302021

मोबाइल नं. 09414228995, 09785470992, 09414279715

Email: sbmksj2001@gmail.com

वेदोक्त गो-स्वरूपा

जानकीशरण दास

गावो विश्वस्य मातरः[1]–

जबसे मानव सृष्टि का उद्‌गम हुआ, उसका मूल केन्द्र भारत खण्ड रहा है। हमारा यह देश संसार का अति प्राचीन देश है, इसलिए इस देश की संस्कृति भी उतनी ही प्राचीन है। इस प्राचीन संस्कृति का मूल है–'वेद'। वेद आधारित इस देश की संस्कृति को समय–समय पर ऋषि–महर्षि, सन्तजनों ने वेदानुसारी धर्मग्रन्थों के माध्यम से जो दिशा–निर्देश दिये, इसी कारण यह देश सर्वदा से नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के अग्रगण्य रहते हुए विश्व को मानवता का मार्गदर्शन देता रहा है। सनातन धर्म में प्राणिमात्र के लिए "सर्वे भवन्तु सुखिनः[2]" की उदात्त कामना की गयी है। इस संस्कृति का प्रत्येक कर्म, दया, परोपकार, कर्त्तव्य पालन की भावना को दर्शाता है। यह संस्कृति न केवल मानव के प्रति अपितु पशुओं के प्रति भी दया भावना रखने का उपदेश देती है। पशुओं में मानव–जाति के लिए गौ से बढ़कर उपकार करने वाली और कोई वस्तु नहीं है। गौ मानव जाति की माता के समान उपकार करने वाली, दीर्घायु और निरोगता देने वाली है। यह अनेक प्रकार से प्राणिमात्र की सेवा कर उन्हें सुख पहुँचाती है। इसके उपकार से मनुष्य कभी ऋणमुक्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि हिन्दू जाति ने गाय को देवता और माता के सदृश्य समझकर उसकी सेवा शुश्रूषा करना अपना प्रधान धर्म समझा है। संस्कृत में गो शब्द के कई अर्थ होते हैं।[3] यथा–

(1) "गच्छत्यनेन, गम्–करणे डो[4]" इस व्युत्पत्ति से "गच्छति इति गौः, गम्यते अनेन वा गौः" अर्थात् जो गमन करती है, जो गतिशील है, वह गौ है।

1. प्रस्तुत लेख मेरे पूज्य गुरुदेव श्रद्धेय स्वामी श्री रामप्रकाशाचार्यजी अच्युत द्वारा लिखित "कामधेनु" पुस्तक तथा उस पर आधारित संवाद का निष्कर्ष है।
2. "सर्वे भवन्तु सुखिनः" इस मन्त्र का मूल मुझे काफी प्रयास के बाद भी नहीं मिला, किन्तु हम सदियों से इस प्रार्थना मन्त्र का गायन करते आ रहे हैं, अतः कहीं–न–कहीं आर्ष साहित्य में अवश्य रहा होगा। सम्प्रति इससे मिलता–जुलता मन्त्र गरुडपुराण (35.51) में दिखाई देता है, जो इस प्रकार है–"सर्वेषां मङ्गलं भूयात्सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।" कदाचित् यह मन्त्र ही प्रथम चरण के बदले स्वरूप में आज विद्यमान है, इस विषय में विद्वानों की सम्मति आवश्यक है।

(2) गाङ्–गतौ[5] इस भ्वादिगणीय धातु से "गाति इति गौः" अर्थात् जो चलती है, गमन करती है, जो गतिशील है, वह 'गौ' है। सब जगत्, सब संसार ही गतियुक्त है, सम्पूर्ण विश्व ही गतिमान है। जिस कारण से सब विश्व गतिशील है, उसी कारण यौगिक अर्थ से अथवा धात्वर्थ से सम्पूर्ण विश्व 'गौ' है, क्योंकि वह गतिमान है और सम्पूर्ण विश्व में ऐसी कोई वस्तु नहीं कि, जो गतियुक्त न हो। सम्पूर्ण विश्व के गतिमान होने से उसका अन्वर्थक नाम 'गौ' हुआ है। अतः यौगिक अर्थ से सम्पूर्ण विश्व ही 'गौ' है।

अमरकोश में गाय के नौ नाम दिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं–

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी।
अर्जुन्यघ्ना रोहिणी स्यात् स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी।।[6]

यहाँ उत्तम गाय का विश्लेषण "नैचिकी" प्राप्त होता है। वैदिक कोश निघण्टु में भी गाय के नौ नाम दिये हैं उनमें से तीन नाम अहिंसार्थक हैं–

(1) अघन्या (अ–घन्या) = हनन करने अयोग्य अर्थात् अहन्तव्या
(2) अही (अ–ही) = हनन करने अयोग्य अर्थात् अहन्तव्या
(3) अदिति (अ–दिति) = टुकड़े करने अयोग्य अर्थात् अखण्डनीया

उपर्युक्त तीनों अर्थ स्वयं अपने अर्थ से बता रहे हैं कि गो पवित्र है इसलिए उसकी कभी हिंसा नहीं होनी चाहिए। यही अर्थ प्रमाणरूप से मानकर महाभारत में निम्न श्लोक प्राप्त होता है–

अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशलं वृषं गां वाऽऽलभेत् तु यः।।[7]

अर्थात् श्रुति में गौओं को अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है, फिर कौन उन्हें मारने का विचार करेगा? जो पुरुष गाय और बैलों को मारता है, वह महान पाप करता है।

3. पशु अर्थ में–"जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्"–रघुवंश, 2.3
पृथ्वी अर्थ में–"दुदोह गां स यज्ञाय"–रघुवंश, 1.26
वाणी, शब्द अर्थ में–"रघोरुदारामपि गां निशम्य"–रघुवंश, 2.59, 5.12; किरातार्जुनीय 4.20
4. वाचस्पत्य, पृष्ठ 2681
5. पाणिनीय धातुपाठ, धातु संख्या 150
6. अमरकोश, 2.9.66

वेदों में गाय–

यजुर्वेद में गाय को इडा (स्तुति की पात्र), रनता (रमयित्री), हव्या (उसके दूध की हवन में आहुति दिए जाने से), काम्या (चाहने योग्य होने से), चंद्रा (आह्लाददायिनि होने से), ज्योति (मन आदि को ज्योति प्रदान करने से), अदिति (अखंडनीय होने से), सरस्वती (दुग्धवती होने से), मही (महिमा शालिनी होने से), विश्रुती (विविध रूपों में श्रुत होने से) और अघन्या (न मारी जाने योग्य) कहा गया हैं।[8] इन नामों से यह स्पष्ट है कि वेदों में गाय को सम्मान की दृष्टि से देखा गया हैं। वेदोक्त गाय का स्वरूप कल्याणकारी है। अथर्ववेद में लिखा है जो गाय के कान भी खरोचंता है, वह देवों की दृष्टि में अपराधी सिद्ध होता हैं। जो गायों को दाग कर निशान डालना चाहता है, उसका धन क्षीण हो जाता है। यदि किसी भोग के लिए इसके बाल काटता है, तो उसके किशोर मर जाते हैं।[9] अथर्ववेद के ही एक मन्त्र में कहा गया है कि गाय को पैर से ठोकर मारता है उसका मैं मूलोछेद कर देता हूँ।[10] वेदों के अनुसार गाय, बैल आदि सब अवध्य हैं। ऋग्वेद का इस मन्त्र कहता है कि "मैं समझदार मनुष्य को कह देता हूँ कि तू बेचारी बेकसूर गाय की हत्या मत कर, वह अदिति हैं अर्थात् काटने–चीरने योग्य नहीं हैं।"[11]

इसी प्रकार गो विषयक बहुत सारे वाक्य वेदों में दृष्टिगोचर होते हैं जैसे कि "मनुष्य अल्पबुद्धि होकर गाय को मारे कांटे नहीं।"[12] "तू हमारे गाय, घोड़े और पुरुष को मत मार।"[13] "जो (वृद्ध) गाय को घर में पकाता है उसके पुत्र मर जाते हैं।"[14] "जो बैलों को नहीं खाता वह कष्ट में नहीं पड़ता है।"[15] "गो वधालय में न जाये।"[16] "जो गोहत्या करके गाय के दूध से लोगों को वंचित करे, तलवार से उसका सर काट दो।"[17] "गाय का वध मत कर, जो अखंडनीय हैं।"[18] "वे लोग मूढ़ हैं जो कुत्ते से या गाय के अंगों से यज्ञ करते हैं।"[19] "गो हत्यारे को प्राण दंड दो।"[20] ऋग्वेद के एक मंत्र में गोरक्षा एवं गाय का महात्म्य इस प्रकार बताया गया है–

---

7. महाभारत, शान्तिपर्व 262.47
8. "इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेदिति सरस्वति महि विश्रुति।
   एता तेऽअघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतम्ब्रूतात्।।"–यजुर्वेद, 8.43
9. अथर्ववेद, 12.4.6.8
10. अथर्ववेद, 13.1.56
11. ऋग्वेद, 08.101.15
12. ऋग्वेद, 08.101.16
13. अथर्ववेद, 10.1.29

"माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामादितिं वधिष्ट।।"[21]

गाय के विषय में वैदिक ऋषियों की सम्मति–

सभी वैदिक ऋषि गाय को अवध्य मानते हैं। एक भी ऋषि ऐसा नहीं दीखता जो कि गाय की हिंसा चाहता हो। गाय को दुःख देना भी ऋषियों को इष्टा नहीं है। बल्कि उन्होंने तो मानवमात्र से गाय की सेवा करने का अनुशासन दिया है, उसकी उपयोगिता बताई है। यहाँ उन वैदिक ऋषियों के कुछ नाम दिये गये हैं, जिन्होंने वेद में गाय को अवध्य माना है। जैसे कि मैत्रावरुणि अगस्त्य ऋषि–"गावो धेनवो बर्हिष्यादब्धा"[22]–गौवों हिंसा करने योग्य नहीं है। अथर्वा ऋषि–"हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः"[23] अर्थात् गाय की हिंसा न कर। "मुग्धा देवा उत शुनाऽयजन्तोत गोरङ्गैः पुरुधाऽयजन्त"[24] अर्थात् मूढ़ लोग ही गाय के अंगों से हवन करते हैं। "यां देवाः प्रतिनन्दन्दित रात्रिं धेनुमुपायतीम्। संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमङ्गली"[25] अर्थात् गाय सुख देने वाली है। "निरुन्धानो अमतिं गोभिः"[26] अर्थात् गायों से निर्बुद्धता को रोका जा सकता है अर्थात् गोदुग्ध से बुद्धि की वृद्धि होती है।

इसी प्रकार अन्य वैदिक ऋषियों ने भी गाय का महत्व वर्णित किया है जिनमें ऋषि कक्षीवान् (दैर्घतमस औशिजः)[27], कुत्स (आंगिरस)[28], चातन ऋषि[29], जमदग्नि (भार्गव) ऋषि[30], दीर्घतमा (औचथ्य)[31], प्रजापति (वैश्वामित्र)[32], प्रत्यगिंरा[33], ब्रह्मा[34], भारद्वाज (बार्हस्पत्य)[35], गयोभू[36], वसिष्ठ (मैत्रावरुण)[37], विश्वामित्र (गाथिन)[38], हिरण्यस्तूप (आंगिरस)[39] आदि ऋषि मुख्य हैं।

---

14. अथर्ववेद, 12.4.38
15. अथर्ववेद, 4.11.3
16. ऋग्वेद, 6.28.4
17. अथर्ववेद, 8.3.24
18. यजुर्वेद, 13.43
19. अथर्वेद, 7.5.5
20. यजुर्वेद, 30.18
21. ऋग्वेद, 8.101.15
22. ऋग्वेद, 1.173.1
23. अथर्ववेद, 6.59.3
24. अथर्ववेद, 7.5.5
25. अथर्ववेद, 3.10.2
26. ऋग्वेद, 1.53.4

इस प्रकार यहाँ पन्द्रह ऋषियों के वचन दिये गये हैं। इनके वचनों में गाय की भक्ति कितनी है, यह यहाँ उपर्युक्त वाक्यों में हम देख सकते हैं। इसी तरह प्रत्येक ऋषि की सम्मति है। गाय अवध्य है, गाय को सुख देना चाहिए, गाय मानवों का हित करती है, गाय के दूध और घी से मनुष्यों की बुद्धि बढ़ती है। उपर्युक्त ऋषियों की सम्मतियाँ मनन करने योग्य हैं। इसी तरह देवताओं का भी गाय के साथ प्रेम है। इन्द्र, सूर्य, अग्नि को गोरक्षक कहा है, इनकी शक्ति के लिए बैल की उपमा दी है। इसी तरह मरूत् देवता तो गोभक्त होने में सुप्रसिद्ध हैं। मरुद्गण के लिए वेद में "गोमातरः"[40] अर्थात् मरुत् गाय को माता मानने वाले तथा "गोबन्धव"[41] अर्थात् मरुत् को गाय को बहन मानने वाला बताया गया है। ऋग्वेद के ही एक अन्य मन्त्र में मरुद्गुणों के विषय में कहा गया है कि वे "पृश्निमातरः"[42] हैं अर्थात् मरुत् गाय को माता मानते हैं। उपर्युक्त मन्त्रों में मरुत् अपने आपको गाय का भाई और गाय को माता मानने वाले हैं। इससे और अधिक गो–भक्ति क्या हो सकती है।

वेदोक्त गो–स्तवन–

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामादितिं वधिष्ट।।[43]

गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, अदिति पुत्रों की बहिन और घृतरूप

27. ऋग्वेद, 1.12.2
28. ऋग्वेद, 1.114.8; 1.114.10; 1.106.1
29. अथर्ववेद, 8.3.16; 1.16.4
30. ऋग्वेद, 8.101.15; 8.101.16
31. ऋग्वेद, 1.164.40; 1.154.6; 1.153.4
32. ऋग्वेद, 3.55.16
33. अथर्ववेद, 4.18.5; 10.1.4 तथा 10.1.29
34. अथर्ववेद, 13.1.56; 11.1.34, 3.12.8
35. ऋग्वेद, 6.4.12; 6.28.1; 4.21.1
36. अथर्ववेद, 5.18.2–3
37. ऋग्वेद, 7.56.17; 7.90.6
38. ऋग्वेद, 3.57.1
39. ऋग्वेद, 1.33.1
40. ऋग्वेद, 1.85.3
41. ऋग्वेद, 8.14.6
42. ऋग्वेद, 1.85.2
43. ऋग्वेद, 8.101.15
44. ऋग्वेद, 6.28.1

अमृत का खजाना है प्रत्येक विचारशील पुरुष को मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध एवं अवध्य गाय का वध मत करो।

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः।।[44]

गौओं ने हमारे यहाँ आकर हमारा कल्याण किया हैं। वे हमारी गोशाला में सुख से बैठें और उसे अपने सुन्दर शब्दों से गुँजा दें। ये विविध रंगों की गौएँ अनेक प्रकार के बछड़े–बछड़ियाँ जनें और इन्द्र (परमात्मा) के यजन के लिए उषःकाल से पहले दूध देने वाली हों।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिराः दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योतित्ताभिः सचते गोपतिः सह।।[45]

अर्थात् वे गौएँ न तो नष्टा हों, न उन्हें चोर चुरा ले जाय और न शत्रु ही कष्ट पहुँचाये। जिन गौओं की सहायता से उनका स्वामी परमात्मा का यजन करने तथा दान देने में समर्थ होता है, उनके साथ वह चिरकाल तक संयुक्त रहे।

गावो भगो गाव इन्द्रो म इष्टद्रावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्।।[46]

अर्थात् गौएँ हमारा मुख्य धन हों, इन्द्र हमें गोधन प्रदान करें तथा यज्ञों की प्रधान वस्तु सोमरस के साथ मिलकर गौओं का दूध ही उनका नैवेद्य बने। जिसके पास ये गौएँ हैं, वह तो एक प्रकार से इन्द्र ही है। मैं अपने श्रद्धायुक्त मन से गव्य पदार्थों के द्वारा इन्द्र (भगवान) का यजन करना चाहता हूँ।

यूयं गावो मेदयथ कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु।।[47]

गौओं! तुम कृश शरीर वाले व्यक्ति को हष्ट–पुष्ट कर देती हों एवं तेजोहीन को देखनें में सुन्दर बना देती हो। इतना ही नहीं, तुम अपने मंगलमय शब्द से हमारे घरों को मंगलमय बना देती हों। इसी से विद्वत–सभाओं में तुम्हारे ही महान् यश का गान होता है।

प्रजावतीं सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रापणे पिबन्तीः।

45. अथर्ववेद, 4.21.3
46. अथर्ववेद, 4.21.5
47. अथर्ववेद, 4.21.6

मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्त।।[48]

गौओं! तुम बहुत–से बछड़े जनों, चरने के लिए तुम्हें सुन्दर चारा प्राप्त हो तथा सुन्दर जलाशय में तुम शुद्ध जल पीती रहो। तुम चोरों तथा दुष्ट हिंसक जीवों के चंगुल में न फँसों और रुद्र का शस्त्र तुम्हारी सब ओर से रक्षा करे।

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय।।[49]

अर्थात् रंभने वाली तथा ऐश्वर्या का पालन करने वाली यह गाय मन से बछड़े की कामना करती हुई समीप आयी है। यह अवध्य गाय दोनों अश्विनीदेवों के लिए दूध दें और वह बड़े सौभाग्य के लिए बढ़े। इसी प्रकार अथर्ववेद के तीसरे काण्ड का चौहदवाँ सूक्त गोसूक्त नाम से सम्बोधित किया गया है। जिसमें गो का उपयोग एवं उसकी महत्ता का स्पष्ट परिचय दिया गया है। जैसे कि–

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या।
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि।।

सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः।
समिन्द्रो यो धनञ्जयो मयि पुष्यत यद्धसु।।

सञ्जग्माना अबिभ्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः।
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वन्मीवा उपेतन।।

इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत।
इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः।।

शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत।
इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि।।

मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः।
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम।।[50]

इसी प्रकार अथर्ववेद[51] में भी मातृनामा ऋषि द्वारा त्रिष्टुप् छन्द में गो की महिमा उल्लिखित है। अथर्ववेद के एक अन्य सूक्त[52] में गाय को "धनु" नाम से सम्बोधित किया गया है। जिसमें गाय को पुष्टि–प्रदान करने के लिए उपाय तथा उसकी सुरक्षा से सम्बन्धित उपायों का विवरण देते हुए उसके प्रत्येक अंग में

48. अथर्ववेद, 4.21.7
49. ऋग्वेद, 1.164.27
50. अथर्ववेद, 3.14.1–6

विभिन्न देवताओं के वास का उल्लेख प्राप्त होता है। एक अन्य सूक्त जो कि अथर्ववेद[53] से सम्बन्धित है, इसमें ब्रह्मा नामक ऋषि द्वारा गो के साथ अन्य देवता मित्र–वरुण इत्यादि की स्तुति का सूक्त उपलब्ध होता है।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि "को नु गौः क एकऋषिः किमु धाम का आशिषः। यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुः कतमो नु सः।।"[54] अर्थात् सम्पूर्ण धरातल एक ही विश्वरूपी गो है। सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त एक ही परमात्मा, परब्रह्म सबके ज्ञाता और द्रष्टा ऋषि है। इसी वेद के एक अन्य मन्त्र में कहा गया है कि "एको गौरेक एकऋषिरेकं धामैकधाशिष। यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नातिरिच्यते।।"[55] अर्थात् स्वतन्त्र रूप से भी वेद में पाँच परोपकारियों में श्रेष्ठ गाय को ही माना है। गाय जीवों के हर पहलुओं में लाभकारी है, सर्वोपयोगी है। यथा–"चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते। तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः।।"[56] अर्थात् हे पशुओं के स्वामी परमात्मा! ऐसे पशुओं को उत्पन्न करने वाले देव! आपको चारों प्रहर में साष्टांग एवं दसो नाखून सहित आपको प्रणाम है। आपके द्वारा उत्पन्न जो आपके लिए ही पाँच पशु नियुक्त किये

51. "प्रजावती सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः"–अथर्ववेद, 4/21/7
52. अथर्ववेद, 1.4.7
53. अथर्ववेद, 1.5.10; इस सूक्त के मन्त्र ऋग्वेद (1.164) में भी इस प्रकार हैं–
"यदायत्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद्वा, त्रैष्टुभं निरतक्षत। यद्वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत्तद्विदुस्ते अमृतत्वमानशुः।।23।।
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कमर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम्। वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदाक्षरेण मिमते सप्त वाणीः।।24।।
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद्रथंतरे सूर्यं पर्यपश्यत्। गायत्रस्य समधिस्तिस्र आहुस्ततो मह्ना प्र रिरिचे महित्वा।।25।।
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्। श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचम्।।26।।
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्। दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय।।27।।
गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्कृणोन्मातवा। सृक्वाणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायु पयते पयोभिः।।28।।
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता। सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रिमौहत।।29।।
अनच्छये तुरगातु जीवजेजदध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्। जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।।30।।
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्। स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः।।31।।
य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्। स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश।।32।।

गये हैं–गायें, घोड़े, पुरुष तथा बकरियाँ और भेड़ें–इन पाँचों श्रेष्ठ पशुओं में आपने गाय को प्रथम स्थान पर रखकर गाय की श्रेष्ठता प्रदर्शित की है। अत एव विश्वरूप एक ही गो है, जिसके दूध का विविध रूप से सभी सेवन करते हैं तथा उसी से हष्ट–पुष्ट होते हैं। इस गो की देखभाल करने वाले स्वामी परब्रह्म परमात्मा हैं। इस गो के रहने के लिए व्यापक विश्व ही गोशाला है और यही परमपद है।

इस प्रकार वेदोक गो महिमा इतिहास पुराणादि धर्मग्रन्थों में भी वर्णित हुई हैं। परोपकारी तथा अहिंसा के मूर्तरूप गोवंश के लिए समुचित रूप से वेद, पुराण, स्मृति ग्रन्थों में महत्त्वप्रद सार कथित हुआ है। महाभारत के अनुशासन पर्व में आया है कि–

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्।।[57]

अर्थात् गायें (गो–सेवा) स्वर्ग की सीढ़ी है, वे स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं। वे सभी कामनाएँ पूरी करने वाली देवी स्वरूपा हैं, उसके समान और कोई सजीव प्राणी नहीं है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी गाय की महिमा के विषय में निम्न श्लोक प्राप्त होते हैं–

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च।
तद्गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः।।

गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलकं कुरुते नरः।
तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे।।

गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्।
प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम्।।[58]

अर्थात् गाय के शरीर में समस्त देवगण निवास करते हैं और गाय के पैरों में समस्त तीर्थ निवास करते हैं। गाय के गुह्यभाग में सदा लक्ष्मी रहती हैं। गाय के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक जो मनुष्य अपने मस्तक पर लगाता है, वह तत्काल तीर्थ जल में स्नान करने का पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पद–पद

54. अथर्ववेद, 8.9.25
55. अथर्ववेद, 8.9.26
56. अथर्ववेद, 11.2.9
57. महाभारत, अनुशासनपर्व, 51.33
58. ब्रह्मवैवर्तपुराण, 21.91–93

पर विजय होती है। जहाँ पर गौएँ रहती हैं उस स्थान की भूमि को तीर्थ कहा गया है, ऐसी भूमि में जिस मनुष्य की मृत्यु होती है वह तत्काल मुक्त हो जाता है, यह निश्चित है।

धर्मग्रन्थों में गो महिमा–

"मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः"[59] महाभारतकार की यह उक्ति धर्मग्रन्थों में वर्णित गो महिमा की पुष्टि करती हुई कहती है कि गाय प्राणिमात्र के लिए माता के समान सर्व सुख प्रदान करती है। गायें प्राणियों का आधार और कल्याण की नीति है। भूत और भविष्य गौओं के ही हाथ में है। वे ही सदा रहने वाली पुष्टि का कारण तथा लक्ष्मी की जड़ है। गोओं की सेवा में जो कुछ अन्न–धन इत्यादि दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। अन्न गौओं से उत्पन्न होता है, देवताओं को उत्तम हविष्य गौएँ देती हैं तथा स्वहाकार और वषट्कार भी सदा गौओं पर ही अवलम्बित है। गौएं ही यज्ञ का फल देने वाली हैं। उन्हीं में यज्ञों की प्रतिष्ठा है। ऋषियों को प्रातःकाल और सायंकाल होम के समय गोए ही हवन के योग्य घृत आदि पदार्थ देती हैं। जो लोग दूध देने वाली गाय का दान करते हैं, वे अपने समस्त संकटों और पापों से पार हो जाते हैं। जिसके पास दस गौएं हो, वह विधिवत् एक गाय का दान करें और जिसके पास हजार गौएं मौजूद हों, वह सुपात्र में सौ गाएँ दान करे तो इन सबको बराबर फल मिलता है। जो सौ गौओं का स्वामी होकर भी अग्निहोत्र नहीं करता, जो हजार गौएं रखकर यज्ञ नहीं करता तथा जो धनी होकर भी कंजूसी नहीं छोड़ता, वे तीनों मनुष्य सम्मान पाने के अधिकारी नहीं हैं। पौराणिक साहित्य में स्कन्दपुराण में भी उल्लिखित है कि गौएं सम्पूर्ण तपस्वियों से बढ़कर है। इसलिए भगवान शंकर ने गौओं के साथ रहकर तप किया था, एक बार ऋषियों का कुछ अपराध होने से ऋषियों ने शिव को घोर शाप दे दिया था, जिसके भय से त्रस्त होकर शिवजी ने गोलोक पहुँचकर तत्त्ववदर्शी ज्ञानियों के दूसरे रूप सुरभि माता का स्तवन किया, तब शापमुक्त हुए।[60] गो की उपयोगिता के बारे में कुछ और चर्चा करते हुए महाभारत में निर्दिष्ट है कि जो मानव तीन रात तक पंचगव्य के साथ उपवास करके यज्ञाहुति से गोमती मन्त्र का जप करता है, उसे गौओं का वरदान प्राप्त होता है। पुत्र की इच्छा वाले को पुत्र, धन को चाहने वाले को धन, पति की इच्छा रखने वाली स्त्री को पति मिलता है। इस प्रकार गौएं मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करती है, वे यज्ञपुरुष

59. महाभारत, अनुशासनपर्व, 69.7
60. स्कन्दपुराण, नागर खण्ड 258.30–34 तथा 259.58–61

का प्रधान अंग है, उनसे बढ़कर दूसरा कुछ अन्य नहीं है।[61]

गाय प्राणिमात्र के लिए उपयोगी है। संसार में गायें अनेक किस्म की अनेक नस्लों की होती हैं। मानव के जन्म के साथ ही गाय का अस्तित्व एवं उससे सम्बन्ध रहा है, जो निरन्तर रूप से चलता आ रहा है, अतः यह कहना उचित होगा कि मानव समुदाय से गाय का सनातन सम्बन्ध रहा है। माँ के बाद ममत्व भरा इस पशु का स्थान है जो मानव जाति का पालन–पोषण करती है। संस्कृत में इसके अनेक नाम हैं–धेनु, गौ, माता, अर्जुनी आदि। गाय मेरुदण्डीय उपजगत् के अन्तर्गत स्तनधारी प्राणियों के शफवर्ग परिवार की सदस्य है। यद्यपि विश्व में गाय का महत्व है किन्तु भारत में इसका विशिष्ट ही स्थान है। भारत में गाय को पूज्य दृष्टि से देखा जाता है तथा इसकी माता के रूप में पूजा की जाती है।

अधिष्ठाता–दर्शनसङ्काय
श्रीसोमनाथसंस्कृविश्वविद्यालय, वेरावल
email: janakisharan@gmail.com
मोबाइल–8758817525

---

61. महाभारत, अनुशासन पर्व 81